Online ISSN: 3107 - 7676
IJMR 2025; 1(1): 16-18
2025 January - Fabruary
www.allmultiresearchjournal.com

Received: 02-12-2024
Accepted: 05-01-2025
Published: 07-01-2025

बहु-शोध पत्रिका: विभिन्न क्षेत्रों में शोध का संगम

अशोक
ललित कला अकादमी, संस्कृति मंत्रालय से सम्बद्ध

Corresponding Author; **अशोक**

सारांश
वर्तमान युग में ज्ञान की बहुलता और अनुसंधान की विविधता ने अकादमिक पत्रिकाओं को एक नवीन दिशा दी है। बहु-शोध पत्रिकाएं उन सभी शोधों को समाहित करती हैं जो विविध विषयों से संबंधित होते हैं, चाहे वे विज्ञान, प्रौद्योगिकी, समाजशास्त्र, शिक्षा, स्वास्थ्य या पर्यावरण के क्षेत्र से हों। इस आलेख में हम बहु-शोध पत्रिकाओं की आवश्यकता, उनके लाभ, उनके सामने आने वाली चुनौतियाँ और भविष्य की संभावनाओं का सम्यक विश्लेषण करते हैं।

कूट शब्द : समाजशास्त्र, शिक्षा, स्वास्थ्य या पर्यावरण

प्रस्तावना
पारंपरिक शोध पत्रिकाएं प्रायः किसी एक विशिष्ट विषय या अनुशासन तक सीमित रहती हैं, जैसे केवल जैव-विज्ञान, केवल समाजशास्त्र, या केवल अभियांत्रिकी। किंतु आज के परिप्रेक्ष्य में शोध की प्रकृति बहु-विषयक होती जा रही है। समस्याएं अब सीमित दायरे में नहीं हैं - जलवायु परिवर्तन, महामारी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, शिक्षा सुधार आदि ऐसे विषय हैं जो अनेक अनुशासनों का समावेश करते हैं। इसीलिए बहु-शोध पत्रिकाओं का महत्व बढ़ा है।

बहु-विषयक अनुसंधान की परिभाषा और विशेषताएं
बहु-विषयक अनुसंधान (Multidisciplinary Research): वह शोध है जिसमें विभिन्न विषयों

के विशेषज्ञ एक साझा समस्या को सुलझाने के लिए मिलकर कार्य करते हैं। इसमें:

- विभिन्न दृष्टिकोणों का समावेश होता है
- समाधान बहुआयामी होते हैं
- संचार और समन्वय अत्यंत आवश्यक होता है
- अनुसंधान परिणाम व्यापक प्रभाव उत्पन्न करते हैं

उदाहरण:

कोविड-19 पर शोध केवल चिकित्सा विज्ञान का विषय नहीं रहा। इसमें सामाजिक दूरी की नीति, डिजिटल शिक्षा, मनोवैज्ञानिक प्रभाव, आर्थिक प्रभाव, और वैक्सीन विकास आदि शामिल रहे।

बहु-शोध पत्रिकाओं की भूमिका

बहु-शोध पत्रिकाएं एक ऐसा मंच प्रदान करती हैं जहां विभिन्न विषयों के शोधार्थी अपने कार्यों को प्रस्तुत कर सकते हैं। इनका उद्देश्य:

- विभिन्न अनुशासनों को जोड़ना
- नवाचार को प्रोत्साहित करना
- एकीकृत समाधान प्रस्तुत करना
- नीतिनिर्माण और समाज सेवा में योगदान देना

प्रमुख बहु-शोध पत्रिकाओं के उदाहरण:

- Nature और Science जैसी अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाएं
- भारत में Current Science और Indian Journal of Multidisciplinary Research

प्रमुख क्षेत्र जो बहु-विषयक शोध से लाभान्वित होते हैं.

1. पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन

यह विषय विज्ञान, भूगोल, समाजशास्त्र, और राजनीति सभी को प्रभावित करता है। जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को समझने के लिए डेटा विश्लेषण, सामाजिक व्यवहार अध्ययन, और नीतिगत ढांचे की आवश्यकता होती है।

2. स्वास्थ्य और जनसंख्या

स्वास्थ्य सेवा केवल रोग के इलाज तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें पोषण, मानसिक स्वास्थ्य, सामाजिक व्यवहार, शिक्षा, और सरकारी योजनाएं सभी सम्मिलित हैं।

3. शिक्षा और प्रौद्योगिकी

आज शिक्षा डिजिटल हो रही है, जिससे शैक्षिक मनोविज्ञान, सूचना प्रौद्योगिकी, संचार विज्ञान, और प्रशासन सभी जुड़ जाते हैं। एक बहु-विषयक शोध ही इस परिवर्तन को सही दिशा दे सकता है।

4. स्मार्ट सिटी और शहरी विकास

स्मार्ट सिटी की अवधारणा को सफल बनाने में तकनीकी, सामाजिक, और प्रशासनिक पक्षों की एकसाथ भूमिका होती है।

बहु-शोध पत्रिकाओं के लाभ

1. **विविध दृष्टिकोणों का समावेश:** एक ही समस्या को अनेक कोणों से देखा जा सकता है
2. **नवाचार को बढ़ावा:** विभिन्न विशेषज्ञों की सोच नए समाधान उत्पन्न करती है
3. **समाजोपयोगी समाधान:** बहु-विषयक शोध आमजन की समस्याओं को अधिक प्रभावी ढंग से सुलझाता है
4. **नीतिगत सहयोग:** सरकारी नीतियों के निर्माण में एकीकृत शोध उपयोगी सिद्ध होता है
5. **शोधार्थियों के लिए व्यापक मंच:** यह पत्रिकाएं नए शोधकर्ताओं को अपनी बात रखने के लिए बेहतर मंच देती हैं

चुनौतियाँ और सीमाएँ

1. समीक्षा प्रक्रिया की जटिलता

एक बहु-विषयक शोधपत्र की समीक्षा करना कठिन होता है क्योंकि उसमें विभिन्न विषयों की जानकारी आवश्यक होती है।

2. प्रकाशन मानकों की विविधता

प्रत्येक अनुशासन के अपने शोध मानक होते हैं, जिन्हें एक साथ समाहित करना चुनौतीपूर्ण होता है।

3. अकादमिक स्वीकृति की समस्या

कुछ पारंपरिक शिक्षाविद बहु-विषयक शोध को गंभीरता से नहीं लेते।

4. संपादन और संपादन समिति की चुनौती

संपादक मंडल को भी विविध क्षेत्रों के विशेषज्ञों को शामिल करना पड़ता है।

समाधान और सुझाव

- बहु-विषयक संपादन समितियों का गठन
- पारदर्शी और विविध विषय विशेषज्ञों की समीक्षा प्रणाली
- अंतर-संवाद सत्र और विशेष अंक
- अकादमिक जगत में बहु-विषयक शोध के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास

डिजिटल युग में बहु-शोध पत्रिकाएं

इंटरनेट और डिजिटल प्रकाशन के आने से बहु-शोध पत्रिकाओं का प्रसार और भी आसान हो गया है। अब:

- ओपन एक्सेस मॉडल उपलब्ध हैं
- शोध पत्रों की अधिक पहुँच है
- सहयोगी लेखन और क्रॉस-साइटेशन बढ़े हैं
- डिजिटल टूल्स जैसे Zotero, Mendeley और AI आधारित संपादन उपलब्ध हैं

भविष्य की दिशा

- अधिक बहु-शोध पत्रिकाओं की स्थापना
- राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सहयोग
- शोध के सामाजिक प्रभाव पर ज़ोर
- छात्रों को बहु-विषयक सोच के लिए प्रेरित करना
- नीतिगत संस्थाओं में शोध पत्रों का उपयोग

10. निष्कर्ष

बहु-शोध पत्रिकाएं आज की अनुसंधान परंपरा का अनिवार्य अंग बन चुकी हैं। ये समाज, विज्ञान, और नीति के संगम पर स्थित हैं और सभी क्षेत्रों के बीच सेतु का कार्य करती हैं। आज जब समस्याएं जटिल और वैश्विक हैं, तब बहु-विषयक शोध ही एक समग्र समाधान दे सकता है। इसलिए इन पत्रिकाओं को बढ़ावा देना, उनकी गुणवत्ता बनाए रखना, और शोधार्थियों को इसके लिए प्रेरित करना समय की माँग है।

संदर्भ

1. क्लेन जेटी. अंतःविषयकता: इतिहास, सिद्धांत और व्यवहार। डेट्रायट: वेन स्टेट यूनिवर्सिटी प्रेस; 1990.
2. नेशनल एकेडमी ऑफ साइंसेज, इंजीनियरिंग और मेडिसिन। अंतःविषयक अनुसंधान को सुविधाजनक बनाना। वाशिंगटन (डीसी): नेशनल एकेडमीज प्रेस; c2005.
3. रेप्को एएफ, सोजस्टक आर, बुचबर्गर एमपी. अंतःविषयक अध्ययनों का परिचय। दूसरा संस्करण। थाउज़ेंड ओक्स (सीए): SAGE प्रकाशन; c2016.
4. हुउटोनीमी के, क्लेन जेटी, ब्रून एच, हुक्किनेन जे. अंतःविषयकता का विश्लेषण: टाइपोलॉजी और संकेतक। अनुसंधान नीति। 2010;39(1):79-88.
5. जैकब्स जेए, फ्रिकेल एस. अंतःविषयकता: एक महत्वपूर्ण मूल्यांकन। समाजशास्त्र की वार्षिक समीक्षा। 2009;35:43-65.
6. राफोल्स आई, लेडेसडॉर्फ एल, ओ'हारे ए, नाइटिंगेल पी, स्टर्लिंग ए. जर्नल रैंकिंग कैसे अंतःविषय अनुसंधान को दबा सकती है: नवाचार अध्ययन और व्यवसाय और प्रबंधन के बीच तुलना। अनुसंधान नीति। 2012;41(7):1262-82।
7. बैरी ए, बोर्न जी. अंतःविषय: सामाजिक और प्राकृतिक विज्ञानों का पुनर्गठन। लंदन: रूटलेज; c2013.